विषय– हिन्दी 3

2018

समय–3 घंटा 15 मिनट वर्ग–XII (कला)

पूर्णांक– 100

1. बहुवैकल्पिक उत्तरों में से सही उत्तर दें:– 1 X 50 = 50

1. बालकृष्ण भट्ट किस युग के लेखक माने जाते हैं–
(i) द्विवेदी युग (ii) भारतेन्दु युग (iii) छायावादी काल (iv) आधुनिक काल

2. पलटन का विदुषक कौन था–
(i) लहना सिंह (ii) वजीरा सिंह (iii) उधम सिंह (iv) बाँके सिंह

3. इण्डियन एक्सप्रेस के मालिक कौन थे–
(i) रामनाथ गोयनका (ii) रामदास बिरला (iii) महेश डालमियाँ (iv) राजेश्वर राव

4. पुरूष रूप तो वृक्ष बन गया, पर नारी को उसने बना दिया–
(i) कली (ii) लहर (iii) लता (iv) छाया

5. भगतसिंह की पहली गिरफ्तारी कब हुई थी–
(i) 1926 (ii) 1930 (iii) 1928 (iv) 1932

6. बिहार का कौन सा विशाल स्तूप प्राचीन स्थापत्य की अभूतपूर्व कृति है–
(i) नंदनगढ़ (ii) चंपारण (iii) भागलपुर (iv) देवबन्द

7. नामवर सिंह के गुरू कौन थे–
(i) डॉ0 नगेन्द्र (ii) हजारी प्रसाद द्विवेदी (iii) डॉ0 रामकुमार वर्मा (iv) बचनेश त्रिपाठी

8. महाराष्ट्र में किस नाम की नाट्य संस्था स्थापित की गई–
(i) बंगदूत (ii) मेघदूत (iii) पवनदूत (iv) सुरदीप

9. मलयज ने डायरी कितने वर्ष तक लिखी थी–
(i) 33 (ii) 32 (iii) 34 (iv) 27

10. मेधा और किसका परस्पर बैर है–
(i) आदर्शता (ii) भय (iii) परम्परा (iv) क्रान्ति

11. सूर की भक्ति किस रीति की थी–
(i) हास्यभाव (ii) माधुर्य भाव (iii) सख्य भाव (iv) करूण भाव

12. गोस्वामी जी किस काव्यधारा के कवि थे–
(i) कृष्ण काव्यधारा (ii) रीति काव्यधारा (iii) भक्ति काव्यधारा (iv) राम काव्यधारा

रामाशीष –4603

13. नाभादास ने सूरदास को किस क्षेत्र में अद्भुत कहा है–
(i) रसधारी (ii) तुकधारी (iii) विविधारी (iv) वृत्तधारी

14. सहस्त्रबाहु पर किसका आक्रमण हुआ था–
(i) श्रीराम का (ii) रावण का (iii) परशुराम का (iv) शिवाजी का

15. इनमें से छायावाद की कौन–सी विशेषता नहीं है–
(i) लाक्षणिकता (ii) रहस्यात्मक (iii) दार्शनिकता (iv) बुद्धिवादिता

16. शमशेर ऐसे कवि हैं जो अपना असर धीरे–धीरे डालते हैं। यह कथन किसका है–
(i) नामवर सिंह (ii) अज्ञेय (iii) अरूण कमल (iv) प्रभाकर माचवे

17. विराट प्रकाश के साथ किसकी ज्वाला एक है–
(i) क्रान्ति की (ii) संघर्ष की (iii) हुँकार की (iv) शोषण की

18. समकालीन कविता की वाचनाएँ किस कविता केन्द्र की स्थापना, रघुवीर सहाय ने की थी–
(i) कामुदी (ii) यायावर (iii) नचिकेता (iv) जूही

19. 'प्यारे नन्हें बेटे को' कविता में लोहा किसका प्रतीक है–
(i) चेतना का (ii) शांति का (iii) कर्म का (iv) मजबूरी का

20. इनमें से अशोक वाजपेयी का कविता–संग्रह कौन–सा नहीं है–
(i) उम्मीद का दूसरा नाम (ii) दुःख चिट्ठीरसा है (iii) विवक्षा (iv) पारायण

21. विशेषण के मुख्य रूप से कितने भेद हैं–
(i) दो (ii) तीन (iii) चार (iv) पाँच

22. कर्म के आधार पर क्रिया के कितने भेद हैं–
(i) दो (ii) चार (iii) पाँच (iv) छह

23. वाच्य कितने प्रकार के होते हैं–
(i) दो (ii) चार (iii) पाँच (iv) तीन

24. देव्यर्पण का संधि–विच्छेद है–
(i) देव + अर्पण (ii) देवी + अर्पण (iii) दे + यर्पण (iv) देव्य + अर्पण

25. सन्मार्ग का संधि–विच्छेद है–
(i) सत् + मार्ग (ii) सत + मार्ग (iii) सतः + मार्ग (iv) सन + मार्ग

26. तल्लीन का संधि–विच्छेद है–
(i) तल + लीन (ii) तल्ली + न (iii) तत् + लीन (iv) ततः + लीन

रामाश्रीष प्रसाद

27. संजय का संधि–विच्छेद है–
(i) सम् + जय (ii) सन् + जय (iii) सं + जय (iv) सः + जय

28. संरक्षण का संधि–विच्छेद है–
(i) सं + रक्षण (ii) सन् + रक्षण (iii) सम् + रक्षण (iv) इनमें से कोई नहीं

29. निस्संतान का संधि–विच्छेद है–
(i) निः + संतान (ii) निस्सं + तान (iii) निस् + तान (iv) इनमें से कोई नहीं

30. निः + रज का संधि है–
(i) नीरज (ii) निरज (iii) निस्रज (iv) नीरज

31. 'अक्ल का दुश्मन' मुहावरे का अर्थ है–
(i) मूर्ख (ii) धोखेबाज मित्र (iii) भला–बुरा कहना (iv) अप्रिय होना

32. 'खून–पसीना एक करना' मुहावरे का अर्थ है–
(i) सहयोग करना (ii) कठोर परिश्रम करना (iii) भाग्य–पलटना (iv) अटल रहना

33. 'नजरों से गिरना' मुहावरे का अर्थ है–
(i) अप्रिय होना (ii) घबड़ा जाना (iii) निराश होना (iv) नष्ट–भ्रष्ट कर देना

34. 'उल्लू बनाना' मुहावरे का अर्थ है–
(i) ईर्ष्या करना (ii) मूर्ख बनाना (iii) उल्टा काम करना (iv) बुरी तरह हराना

35. 'उँगली पर नचाना' का अर्थ है–
(i) वश में रखना (ii) एक समान समझना (iii) तैयार होना (iv) बहुत दिन बाद मिलना

36. यथाशक्ति कौन–सा समास है–
(i) तत्पुरूष (ii) कर्मधारय (iii) अव्ययीभाव (iv) द्वंद्व

37. पथभ्रष्ट कौन–सा तत्पुरूष समास है–
(i) अपादान (ii) संबंध (iii) करण (iv) कर्म

38. जीवनपर्यन्त कौन–सा समास है–
(i) द्वंद्व (ii) द्विगु (iii) तत्पुरूष (iv) अव्ययीभाव

39. इतरेतर द्वन्द्व का उदाहरण है–
(i) राम और कृष्ण (ii) रूपया–पैसा (iii) सुख–दुख (iv) जी–जान

40. पीताम्बर कौन–सा समास है–
(i) बहुव्रीहि समास (ii) द्वंद्व सामस (iii) द्विगु समास (iv) तत्पुरूष समास

41. जितेन्द्रिय कौन बहुव्रीहि समास है–
(i) अधिकरण बहुव्रीहि (ii) समानाधिकरण बहुव्रीहि (iii) सह बहुव्रीहि (iv) व्यतिरेक बहुव्रीहि

42. वनमानुस कौन सा तत्पुरुष समास है–
(i) अपादान (ii) सम्बन्ध (iii) अधिकरण (iv) सम्प्रदान

43. जठराग्नि का अर्थ है–
(i) वन की आग (ii) पेट की आग (iii) इनमें से दोनो (iv) इनमें से कोई नहीं

44. सेना का पयार्यवाची है–
(i) वृहत् (ii) वाहिनी (iii) अरण्य (iv) अरि

45. वसन का पयार्यवाची है–
(i) पट (ii) वपु (iii) कातर (iv) अशनि

46. वसंत का पयार्यवाची है–
(i) जर (ii) प्रदोष (iii) ऋतुराज (iv) अयन

47. नियति का पयार्यवाची है–
(i) विधि (ii) विद्रुम (iii) निबुद्वि (iv) विकट

48. वासन का पयार्यवाची है–
(i) मधु (ii) पात्र (iii) परिणय (iv) पादप

49. तारा का पयार्यवाची है–
(i) उडु (ii) प्रस्तर (iii) वात (iv) प्रसून

50. सम्पदा का पयार्यवाची है–
(i) उर्वि (ii) दमुल (iii) विभूति (iv) आपगा

2. किसी एक पर निबंध लिखें– 1 X 08 = 08

विजयादशमी, समय का महत्त्व, मेरे प्रिय कवि, पुस्तकालय, मनोरंजन के साधन

3. सप्रसंग व्याख्या करें– 2 X 04 = 08

क व्यक्ति से नहीं हमें तो नीतियों से झगड़ा है, सिद्वांतों से झगड़ा है, कार्यों से झगड़ा है।

अथवा

जिस पुरुष में नारीत्व नहीं, अपूर्ण है।

ख चिर निराशा नीरधर से,
प्रतिच्छायित अश्रु–सर में,
मधुप मुखर मरन्द–मुकुलित,
मैं सजल जलजात रे मन!

अथवा

शीत न लग जाए, इस भय से
नहीं गोद से जिसे उतारा।
छोड़ काम दौड़ कर आई
माँ कहकर जिस समय पुकारा।

4. अपने मित्र को गर्मी की छुट्टी बिताने की योजना बताते हुए पत्र लिखें। 1 X 05 = 05

अथवा

अनियमित डाक वितरण के संबंध में पोस्ट मास्टर को एक शिकायती पत्र लिखिए।

5. निम्न प्रश्नों में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर 50–70 शब्दों में दें– 2 X 05 = 10

(i) लहना के गाँव में आया तुर्की मालवी क्या कहता था ?
(ii) जयप्रकाश जी किस प्रकार का नेतृत्व देना चाहते थे ?
(iii) मालती के घर का वातावरण आपको कैसा लगा ?
(iv) बिशनी और मुन्नी को किसकी प्रतीक्षा है ? वे डाकिए की राह क्यों देखती हैं ?
(v) प्रातः नभ की तुलना बहुत नीला शंख से क्यों की गई है ?
(vi) समूची दुनिया में जन–जन का युद्ध क्यों चल रहा है ?
(vii) अधिनायक कौन है ? उसकी क्या पहचान है ?
(viii) लोहा क्या है ? इसकी खोज क्यों की जा रही है ?

6. निम्न प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर 150–250 शब्दों में दें– 3 X 05 = 15

(i) 'प्यारे नन्हें बेटे को' शीर्षक कविता का सारांश लिखें ?
(ii) मशकवाले की 'हार–जीत' कविता में क्या भूमिका है ?
(iii) ज्वाला कहाँ से उठती है ? कवि ने उसे अतिक्रुद्ध क्यों कहा है ?
(iv) लेखक और मालती के संबंध का परिचय पाठ के आधार पर दें ?
(v) भगत सिंह की विद्यार्थियों से क्या अपेक्षाएँ हैं ?
(vi) गंगा पर पुल बनाने में अंग्रजों ने क्या दिलचस्पी नहीं ली ?

7. संक्षेपण करें:– 1 X 04 = 04

धर्म को जिसने भी एक तरह की अफीम कहा, झूठ नहीं कहा। लेकिन ऐसा नहीं लगता कि यह अफीम किसी–न–किसी को दी हो, लोगों ने खुद अपने लिए इसका आविष्कार किया। यह न होती तो दूसरी कोई अफीम होती। जहाँ सर पर पूरे वक्त एक तलवार लटक रही हो और किसी को कुछ पता न हो कि अगले क्षण क्या हो जाएगा, वहाँ आदमी का मन एक–न–एक सहारा खोजता ही है। कहाँ तक आदमी चिंता करे, किस चीज की चिंता करे।

रामाशीष –Ybm,

2018

(कला)

(1) उत्तरः– (ii) भारतेन्दु युग

(2) उत्तरः– (ii) वजीरा सिंह

(3) उत्तरः– (i) रामनाथ गोयनका

(4) उत्तरः– (iii) लता

(5) उत्तरः– (i) 1926

(6) उत्तरः– (i) नंदनगढ़

(7) उत्तरः– (ii) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(8) उत्तरः– (ii) मेघदूत

(9) उत्तरः– (ii) 32

(10) उत्तरः– (ii) भय

(11) उत्तरः– (iii) सख्य भाव

(12) उत्तरः– (iv) राम कावयधारा

(13) उत्तरः– (ii) तुकधारी

(14) उत्तरः– (iii) परशुराम का

(15) उत्तरः– (iv) बुद्विवादिता

(16) उत्तरः– (iii) अरूण कमल

(17) उत्तरः– (i) क्रान्ति की

(18) उत्तरः– (i) कामुदी

(19) उत्तरः– (iii) कर्म का

(20) उत्तरः– (iv) पारायण

(21) उत्तरः– (iii) चार

(22) उत्तरः– (i) दो

(23) उत्तरः– (iv) तीन

(24) उत्तरः– (ii) देवी + अर्पण

रामाश्रीष यादव

(25) उत्तरः– (i) सत् + मार्ग

(26) उत्तरः– (iii) तत् + लीन

(27) उत्तरः– (i) सम् + जय

(28) उत्तरः– (iii) सम् + रक्षण

(29) उत्तरः– (i) निः + संतान

(30) उत्तरः– (i) नीरज

(31) उत्तरः– (i) मूर्ख

(32) उत्तरः– (ii) कठोर परिश्रम करना

(33) उत्तरः– (i) अप्रिय होना

(34) उत्तरः– (ii) मूर्ख बनाना

(35) उत्तरः– (i) वश में रखना

(36) उत्तरः– (iii) अव्ययीभाव

(37) उत्तरः– (i) अपादान

(38) उत्तरः– (iv) अव्ययीभाव

(39) उत्तरः– (i) राम और कृष्ण

(40) उत्तरः– (i) बहुब्रीहि समास

(41) उत्तरः– (ii) समानाधिकरण बहुब्रीहि

(42) उत्तरः– (ii) सम्बन्ध

(43) उत्तरः– (ii) पेट की आग

(44) उत्तरः– (ii) वाहिनी

(45) उत्तरः– (i) पट

(46) उत्तरः– (iii) ऋतुराज

(47) उत्तरः– (i) विधि

(48) उत्तरः– (ii) पात्र

(49) उत्तरः– (i) उडु

(50) उत्तरः– (iii) विभूति

Set-3

विषय-हिन्दी

2018

समय-3 घंटा 15 मिनट वर्ग-XII (कला) (A-LL-HIN-OPT)

पूर्णांक-100

प्रश्न संख्या-2, 3, 4, 5, 6 एवं 7 का उत्तर : 50

प्रश्न-2. किसी एक पर निबंध लिखें : 1×8=8

विजयादशमी

हिन्दुस्तान के पर्वों की लड़ी में विजयादशमी एक प्रमुख कड़ी है। यह दशहरा, दुर्गापूजा, आदि अनेक नामों से प्रचलित है। हर नाम के साथ एक दन्तकथा जुड़ी हुई है, जो इसकी सार्थकता और महत्ता को प्रतिपादित करती है। इस पर्व का श्रीगणेश अश्विन मास की प्रतिपदा से होती है और समापन दशमी को होती है। प्रतिपदा से लेकर नवमी तक जिन नव दुर्गाओं की पूजा होती उनके नाम हैं (1) शैलपुत्री (2)ब्रह्मचारिणी (3) चन्द्रघण्टा (4)कुष्माण्डा (5)स्कन्दमाता (6) कात्यायनी (7) कालरात्री (8) महागौरी (9) सिद्धरात्रि

ये शब्द माता दुर्गा के एक ही महाशक्ति के नौ रूप हैं। हर भक्त पवित्रता और श्रद्धा के साथ माँ दुर्गा की अराधना और पूजा करता है। भक्तों के अराधना की पराकाष्टा होती है। कोई दसों दिन निराहार रहकर, कोई फलाहार रहकर, कोई निर्जला रहकर इनकी अराधना करता है। यह शक्ति की देवी है शक्ति तथा ज्ञान जीवन के दो पहलू हैं। जीवन की सार्थकता हेतु दोनों पहलुओं की उपस्थिति अनिवार्य है।

इस पर्व का प्रारम्भ प्रकृति के सुरम्य वातावरण में होता है। इस समय कारे-कजरारे बादल शरद ऋतु का मधुमय आगमन का संदेश देकर लौट आते हैं और धरती पंकमुक्त होकर हरितिमा की चादर ओढ़े रहती है। कृषक अपने कार्यों से मुक्त होकर फलों को फलीभूत होते देखकर फूले नहीं समाते हैं। इस विराम के क्षण में माँ दुर्गा की अराधना विविध रूपों में होती है। इस अवसर पर माँ दुर्गा की रंग-बिरंगी भव्य मूर्तियाँ बनायी जाती हैं। इन मूर्तियाँ में सिंहवाहिनी महिषमर्दिनी रूप अधिक लोकप्रिय है। महिषासुर की छाती में बरछा धसायी हुई उनका एक पैर महिषासुर के कन्धे पर रहता है और दूसरा पैर सिंह के पीठ पर। उनके मस्तक पर रणक्रिड़ा में बिखरे केश हैं। उनके दस हाथ हैं और दाहिने पाँच हाथों में त्रिशुल, खड्ग चक्र, बाण, तथा शक्ति (साँग) हैं। उनके बायें पाँच हाथों में गदा, धनुष, पाश, अँकुश (गजबाँक) तथा फरसा रहता है। नवों दिन विविध-विधान से पूजनोपरान्त दशमी के दिन समापन चरमोत्कर्ष पर रहता है। बच्चे, बूढ़े, नौजवान नये-नये वस्त्रों से सुसज्जित होकर इसमें शामिल होते हैं। सांस्कृतिक कार्य-क्रमों का धमाल रहता है।

यह पर्व पूरे भारतवर्ष में मनाया जाता है। विभिन्न राज्यों में यह विभिन्न रूप में मनाया जाता है। राजस्थान में दुर्गोत्सव के दिन शस्त्र पूजा भी होती है। गुजरात में पूजन के साथ-साथ नृत्य का आयोजन

भी रहता है। महाराष्ट्र में दुर्गापूजन के साथ दीपोत्सव भी मनाया जाता है। दक्षिण के राज्यों में इस दिन सरस्वती पूजन भी किया जाता है। मैसूर तथा कुल्लू की घाटियों में दुर्गापूजन का मेला बड़ा शानदार होता है। बनारस से पंजाब तक इस अवसर पर रामलीला की जाती है। भारत के बाहर यह पर्व विभिन्न रूप में मनाया जाता है। वास्तव में यह पर्व भक्ति, शक्ति और आनन्द का संगम है, लेकिन समाज के कट्टर पोंगापंथी लोग धार्मिक उन्माद फैलाकर इसके स्वरूप को कलंकित करते हैं। यह हम भारतीयों को शोभा नहीं देता।

समय का महत्व

मानव जीवन में समय मूल्यवान है। एक-एक पल बीतता जाता है। यह किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। हमें सोंचते-सोंचते बीस वर्ष हो गये। हमने क्या किया, बीस वर्ष गँवा दिया। समय गतिशील है और उसकी गतिशीलता कभी कम नहीं होती। इसलिए कहा गया है-

"Time and tide, wait for no man"

समय और ज्वारभाटा किसी की प्रतीक्षा नहीं करते। वह अपने गति से चलता और चलता ही जाता है। व्यक्ति सोचता रह जाता है समय हाथ से निकल जाता है। आप इसकी तीव्रता को पहचानें। यदि आप इसके अनुसार नहीं चलेंगे तो पीछे छूट जायेंगे। वह किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। इसलिए कहा भी गया है-

'समय बीतता जा रहा है, बीता न बहुर कर आता।'

जो समय बीत जाता है वह फिर लौट कर आता नहीं। समय मूल्यवान है। जो व्यक्ति समय के मूल्य को पहचाना नहीं वह जीवन में कुछ कर नहीं पाता। एक-एक क्षण भगवान की दी हुई पूँजी है। यदि हमने इस क्षण को गँवा दिया तो हमारा सारा जीवन चौपट हो जायेगा। दिन में चौबीस घंटे होते हैं। इन चौबीस घंटों में खाने, सोने और नित्यक्रियाओं के बाद जो समय बच जाता है। आप उसका सही सदुपयोग नहीं कर पाते तो वह दिन व्यर्थ ही चला जाता है। वह पुनः लौटकर आनेवाला नहीं है। समयशीलता समय के सदुपयोग की सबसे मजबूत सीढ़ी है। सारा कार्य समय पर करें अन्यथा और सोचते रह जायेंगे और समय बीत जायेगा। इसलिए कवि ने कहा है-

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलय होयेगी, बहुरि करोगे कब।।

संतों का मत है कि यदि आपकी एक घड़ी बीत जाती है, तो वह बीत गयी। बीता हुआ समय फिर वापस लौटकर आता नहीं। समय का सही उपयोग का सबसे बड़ा लाभ तो होता है, अधिकाधिक कार्य सम्पन्न भी हो और समय पर न हो तो उसका क्या महत्व? इसलिए इसके सम्बन्ध में महाकवि तुलसीदास ने कहा है-

का बरसा जब कृषि सुखाने
समय चुक पुनि का पछताने।

समय पर यदि वर्षा हुयी तो उससे भरपूर लाभ मिलता है। कृषि की फसलें सूख गयीं तो वर्षा से कृषि में लाभ नहीं होता। ठीक उसी प्रकार से व्यक्ति यदि समय से चूक गया तो उसे समुचित लाभ नहीं मिल पाता। समुचित लाभ पाने के लिए समयानुरूप कार्य सम्पादन करना चाहिए। अवसर जीवन में रोज नहीं आते। हमें उसकी चाल को पहचानना होगा और अपने को उसके अनुरूप ढालना होगा। समयशील व्यक्ति, प्रत्येक क्षण का उचित उपयोग करनेवाला व्यक्ति, अपने द्वार पर आये अवसर का लाभ उठा सकता है, उससे साहस, निर्भिकता और आत्मबल बना रहता है। जो ऐसा नहीं कर पाता, वह बुजदिल और कायर है।

कहा गया है, धन, बल और स्वास्थ्य किसी प्रकार लौटा भी सकता है, लेकिन जो समय एक बार गुजर गया, वह कभी नहीं लौटता, इसलिए किसी ने यहाँ तक कह डाला है कि समय सबसे महान् है, परमात्मा से भी। भक्ति आदि साधनों से परमात्मा को बुलाया जा सकता, किन्तु कोटि उपाय करने पर भी बीता हुआ समय नहीं बुलाया जा सकता। जो व्यक्ति कठिनाइयों की घाटी को चिरते हुए, आलस्य की दीवार को तोड़ते हुए, तेजी से छलाँग मारते हुए समय की रेलगाड़ी पर सवार हो जाते हैं वे अपने गंतव्य पर पहुँच ही जाते हैं। समय की महत्ता के जाननेवाले कभी पीछे नहीं रहते।

वैयक्तिक और सामाजिक सफलता का रहस्य है समय की पूजा अर्थात् एक-एक पल का सही सदुपयोग। यदि हम एक पल को साधना का दीप बना सकें तो हमारा सम्पूर्ण जीवन सदुपयोग रूपी आलोक से जगमगा जायेगा और आपका जीवन मंगलमय, प्रेरणास्रोत और अनुकरणीय बन जायेगा। अत: आप अपने जीवन के क्षण की महत्ता को समझें।

मेरे प्रिय कवि

कवि अनेक हैं, लेकिन उस अनेकता में प्रियता की एकता जिनमें छिपी है वे हैं सूरदास। ये हमारे प्रिय कवि हैं। जन्मान्ध होते हुए भी इन्होंने अपनी बन्द आँखों से अपने अराध्य देव कृष्ण के बाल स्वरूप से लेकर किशोरावस्था तक का जो वर्णन किया वह हिन्दी साहित्य में अनूठा। उनकी अलोकमयी वर्णन शैली हिन्दी साहित्य में दुर्लभ है। तभी तो आलोचकों ने भी इनकी प्रशंसा करते हुए लिखा:-

सूर-सूर तुलसी शशि, उडगन केशवदास।
अबके कवि खद्योत सम, जहँ-तहँ करत प्रकाश।।

वास्तव में हिन्दी गगनांगन में वात्सल्य, भक्ति और शृंगार के क्षेत्र में महाकवि सूरदास सूर्य के समान हैं। इस क्षेत्र में हिन्दी साहित्य का कोई कवि इनका मुकाबला नहीं कर पाता। यही कारण है कि आलोचकों ने अब के कवियों को खद्योत के समान कहा। उनकी प्रतिभा के समक्ष अन्य कवि बौने प्रतीत होते हैं।

वात्सल्य के क्षेत्र में सूरदास अद्वितीय कवि हैं। उनका मुकाबला हिन्दी का कोई कवि नहीं कर पाता। ये बाल-वर्णन का कोना-कोना झाँक आये। बालक का जन्म से किशोरावस्था की एक-एक कार्यप्रणाली इनकी पैनी दृष्टि से नहीं बच पाती। सूर की विशेषता है कि ये बालक के बाह्य स्वरूपों के साथ उसके

आन्तरिक अयामों को बेनकाब करते हैं। बालक के मन में कौन से भाव उठ रहे हैं कवि उसे खोलकर आपके सामने रख देता है। आप पढ़ते हैं तो लगता है कि कवि का कथन बिल्कुल सत्य है। कविता का विस्तृत फलक और स्वाभाविक विवेचन पद्धति इनकी बारिकियों को खोल कर रख देता है। इसे देखकर ही आलोचकों ने कवियों के बारे में लिखा :

जहाँ न जाय रवि,
वहाँ जाय कवि।

अर्थात् रवि किसी आयाम के वाह्य स्वरूप को ही आलोकित करता है। उसके आन्तरिक आयामों को प्रकाशित नहीं कर पाता। कवि की पैनी दृष्टि से उसका कोई आयाम वंचित नहीं रह पाता। इस तुला पर हमारे लोकप्रिय कवि बिलकुल सटीक उतरते हैं।

वात्सल्य का कोई आयाम सूर की पैनी दृष्टि से बच नहीं पाता। आलोचकों की लेखनी बरबस यह कह उठती है कि 'सूरदास बाल-वर्णन का कोना-कोना झाँक आयें। बालक के वाह्य और आन्तरिक स्वरूपों का अंकन सूर की लेखकी का आधार है। ऐसी प्रतिभा हिन्दी साहित्य के किसी भी कवि में नहीं है।

वात्सल्य के बाद सूर ने अपने आराध्यदेव के शृंगारिक स्वरूपों की चर्चा की है। शृंगार का मुख्य रूपेण दो भेद हैं संयोग शृंगार और वियोग शृंगार। सूर की लेखनी संयोग और वियोग शृंगार के दोनों पक्षों पर चली, लेकिन सूरदास का वियोग शृंगार संयोग की अपेक्षा अधिक मार्मिक, स्वाभाविक और जीवन्त है। सूर की लेखनी केवल वाह्य आयामों को ही चित्रित नहीं करती, बल्कि उसके आन्तरिक पक्षों को खोलकर हमारे सामने रख देती हैं और पाठक उनकी गंगा-यमुना में डूबकी लगाकर अपने को धन्य समझता है।

इन दो पक्षों के अलावे सूर का तीसरा पक्ष भी है और वह है भक्ति। वास्तव में इनकी रचनाओं में वात्सल्य, शृंगार और भक्ति की सुन्दर त्रिवेणी प्रवाहित होती हैं जैसे त्रिवेणी के संगम पर व्यक्ति डूबकी लगाकर अपने को धन्य मानता है, ठीक उसी तरह इनकी रचनाओं का अध्ययन करके पाठक धन्य हो जाता है। अपनी रचनाओं की विशेषता के कारण सूरदास आज मेरे ही नहीं बल्कि भारत के जन-जन के प्यारे बन गये हैं। आज इनके द्वारा विरचित अनेकानेक पद सांस्कृतिक मंचों की शोभा भी बढ़ा रहे हैं। उसका रसास्वादन और उसमें डूबकी लगाकर श्रोता अपने को धन्य समझता है। कवियों के सिरमौर आज मेरे ही नहीं बल्कि भारत के जन-जन के प्रिय हैं। पदों की श्रेष्ठता उसकी लोकप्रियता को दर्शाते हैं।

पुस्तकालय

पुस्तकालय दो शब्दों के मेल से बना है पुस्तक+आलय। अर्थात् पुस्तकों का घर। इसका तात्पर्य गोदाम और दुकान से नहीं है। इसका तात्पर्य ज्ञान के आलय से है। जहाँ ज्ञान की रश्मियाँ चतुर्दिक से आकर पुंज रूप में एकत्रित होकर आलय को चत्मकृत और स्वर्णिम बना देती है, ऐसा आलय पुस्तकालय है। यहाँ

आकर ज्ञान के पियासु अपनी प्यास बुझाते हैं, अपनी जिज्ञासा शांत करते हैं और ज्ञान के दिव्य प्रकाश से अपने को प्रकाशित करते हैं। यह ज्ञान का स्वर्णिम तीर्थस्थल है जहाँ अज्ञान रूपी अन्धकार का नाश और ज्ञान रूपी प्रकाश का सम्बल प्राप्त होता है। यहाँ कई काल, कई प्रकार और कई भाषाओं की पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ रहती हैं। ज्ञान पियासु अपनी प्यास यहाँ आकर बुझाते हैं।

पुस्तकालय कई प्रकार के होते हैं। यथा-(1) सार्वजनिक पुस्तकालय (2) संस्थागत पुस्तकालय, (3) वैयक्तिक पुस्तकालय, (4) राजकीय पुस्तकालय (5) राष्ट्रीय पुस्तकालय और (6) अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तकालय। इन सबों की संरचनात्मक भिन्नता के बावजूद कार्य एक है। ये सारे पुस्तकालय ज्ञान के दीपक को ही प्रज्वलित करते हैं। संस्थागत पुस्तकालय संस्था के लोगों के लिए उपयोगी हैं इसमें क्रोस की पुस्तकें रखी जाती हैं जिसे संस्थानों में अध्ययन करने वाले छात्र-छात्रा लेकर पढ़ते हैं। इन पुस्तकालयों में बाहर के व्यक्ति का प्रवेश निषिद्ध होता है। वैयक्तिक पुस्तकालय विद्यावसनी के लिए होता है, संसार के बड़-बड़े विद्वानों के यहाँ जायें तो उनके यहाँ पुस्तकों का विशाल भण्डार मिलेगा। वे यह मानकर चलते हैं कि पुस्तकों के बिना घर आत्मा विहीन शरीर जैसा है। ऐसे महापुरुष अध्ययन के बाद अपने जीवन में ही पुस्तकालय को किसी संस्था को दान कर देते हैं। श्री खुदाबख्स खाँ, श्री सच्चिदानन्द सिन्हा, डॉ० श्री कृष्ण सिंह के वैयक्तिक पुस्तकालय आज सार्वजनिक पुस्तकालय के रूप में तबदील हो गये हैं। हर राष्ट्र का राष्ट्रीय पुस्तकालय होता है। जहाँ हर प्रकाशक को दो पुस्तकें मुफ्त देनी पड़ती है। चेष्टा यह की जाती है कि हर प्रकार की पुस्तकें इन पुस्तकालयों में उपलब्ध हों।

अब सरकार अपनी ओर से सार्वजनिक पुस्तकालयों को अनुदान प्रदान करती है। इस अनुदान से नयी-नयी पुस्तकें और पत्रिका तथा फर्नीचर आदि खरीदे जाते हैं। हमारे देश में तथा विदेशों में भी अब चल पुस्तकालयों का प्रचलन है। ये पुस्तकालय किसी वाहन पर सुसज्जित होते हैं और चलकर खुद पाठकों के समक्ष पहुँचते हैं। इसके सदस्य घर बैठे पुस्तकों के अध्ययन का लाभ उठाते हैं। सदस्यता शुल्क की राशि बहुत कम रखी जाती है, जिससे आसानी से अधिकांश लोग इसका सदस्य बन सकें। ज्ञानगंगा विशाल जटाजुट में उलझकर न रह जाये, बल्कि सामान्य जनजीवन में भी प्रवाहित हो। इसे ध्यान में रखकर पुस्तकालय की योजना बनायी गयी है।

जिस प्रकार किसी मंदिर में प्रवेश करते ही नास्तिक का मन देवमूर्ति के अभिवादन के लिए मचल उठता है, उसी प्रकार पुस्तकालय में प्रवेश करते ही अध्ययन के प्रति अरुचि रखनेवाले व्यक्ति का मन भी अध्ययन के लिए मचल उठता है। यह वह महासागर है जहाँ भिन्न दिशाओं से आकर ज्ञान सरिता मिलती हैं। पुस्तकालय में ज्ञान का सहस्रदल कमल अपनी सुरभि से हमें मुग्ध करता है। ज्ञान की सहस्र रश्मियाँ हमारे अज्ञान के अन्धकार को दूर करती हैं। यहाँ सभी प्रकार के पाठकों के लिए पुस्तक उपलब्ध हैं। बच्चों के लिए बाल-साहित्य, महिलाओं के लिख नारी सांख, बुजुर्गों के लिए संन्यास साहित्य आदि प्रभाग मौजूद

हैं। यह समाज के सभी अंगों की जिज्ञासा और क्षुधा शांत करती है। कोई भी व्यक्ति या अंग यहाँ से निराश नहीं लौटे। यहाँ सबों के लिए सामग्री और पठन-पाठन की व्यवस्था है। यहाँ कई प्रकार की पत्र-पत्रिकाएँ, समाचार पत्र और पुस्तकें उपलब्ध है। यह ज्ञान का मंदिर है जहाँ का पुजारी समाज का ही एक वर्ग है।

मनोरंजन के साधन

मनोरंजन से तात्पर्य है व्यक्ति को ऊबाऊपन से मुक्त कर उसमें आनन्द का संचार करना. आज के व्यस्तम युग में मनुष्य काफी व्यस्त है। उसका जीवन चित्रवत हो गया है। यंत्र और जीवन में अन्तर है। व्यक्ति किसी कार्य को करते-करते ऊब जाता है। उसे आराम या मनोरंजन चाहिए। आराम के बाद मशीन भी अपना कार्य सुचारू ढंग से करता है। मनुष्य को आराम या मनोरंजन अति आवश्यक है। उसे एक ही प्रकार के काम करते-करते ऊबाऊपन आ जाता है। इस ऊबाऊपन से बचने के लिए मनुष्य को मनोरंजन की आवश्यकता होती है। मनोरंजन मन को रंजित कर उसमें आनन्द का संचार-करता है।

मनोरंजन आज से ही नहीं बल्कि यह आदिकाल से आवश्यक है। उस समय मनोरंजन हेतु नाटक, एकांकी, नृत्य आदि साधनों का उपयोग किया जाता था। आज नाटकों का प्रचलन कम हो गया। इसका स्थान चलचित्रों आदि ने ले लिया। आज चलचित्र, टी०वी०, रेडियो, टेपरेकार्डर इत्यादि अनेकानेक मनोरंजन के साधन मौजूद है। हम इन मनोरंजन के साधनों द्वारा अपना मनोविनोद करते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी मनोरंजन के साधन कम हैं। शहरों में साधनों की सम्पन्नता है। यहाँ कभी-कभी जादू का खेल दिखाकर भी मनोरंजन किया जाता है। दो तीन घंटों की दुनियाँ में हम विविध दृश्यों का अवलोकन और सैर सपाटा करते हैं। एक से एक रोमांचकारी घटना दिखाई जाती हैं। कभी एक लड़की बक्से में बन्द कर दी गयी और वह गायब हो गयी। एक हाथ की वस्तु दूसरे के पास चली गयी। इस तरह के कई हैरतअंगेज घटनाओं द्वारा व्यक्ति का मनोरंजन किया जाता है। एक पतले तार पर लड़की साइकिल चला रही है।

मनोरंजन के साधनों में अनेक प्रकार के खेल, प्रतियोगिता आदि श्रेष्ठ हैं। व्यक्ति इसके माध्यम से अपना मनोरंजन करता है। लोग रमणीय स्थानों का भ्रमण करके भी तरोताजा होते हैं। इसके अलावे नदी तट, सागर तट, प्रदर्शनी, मेला आदि स्थानों में घूमकर आनन्द मनाते हैं और ऊबाऊपन से अपने को मुक्त करते हैं। इस प्रकार मनोरंजन के अनेकानेक साधन हैं।

पढ़े-लिखे लोगों के लिए पुस्तकें और विविध पत्र-पत्रिकाएँ मनोरंजन के साधन हैं। वे इसके द्वारा भी अपना मनोरंजन कर लेते हैं। इससे ज्ञानवर्द्धन तो होता ही है, मानवीय अनुभूतियों को समझने और परखने का मौका भी मिलता है।

विदेशों में आज नये-नये मनोरंजन के साधनों का इजाद किया गया है। भारत इस क्षेत्र में पीछे है।

महानगरों में ऐसे साधन उपलब्ध हैं, लेकिन छोटे शहरों में यह सम्भव नहीं है।

आधुनिकता के परिवेश में राज्य-सरकारों को चाहिए कि वे मनोरंजन के नये साधनों का इजाद करें, जिससे कि लोगों की जिन्दगी में हरियाली आ सके और उनका शुष्क जीवन आनन्दित हो सके। जीवन में मतृत स्फूर्ति, एकरसता का खण्डन, गतिशीलता, दीर्घायुपन आदि का समावेश हो सके एंव मानव जीवन में आनन्द की सरिता प्रवाहित हो सके। वास्तव में मनुष्य की जिन्दगी मनोरंजन बिना शुष्क, आकर्षण विहीन और निरस हो जायेगी। इसमें सरसता कायम रखने हेतु मनोरंजन की सरिता प्रवाहित होनी चाहिए।

प्रश्न-3. सप्रसंग व्याख्या करें : **2×4=8**

"व्यक्ति से नहीं तो नीतियों से झगड़ा है, सिद्धान्तों से झगड़ा है, कार्यों से झगड़ा है।"

ये सुललित, सारगर्भित एवं अर्थमण्डित पंक्तियाँ हमारी पाठय्-पुस्तक 'दिगन्त भाग2' के "सम्पूर्ण क्रांति" नामक शीर्षक से ली गयी हैं। इसके लेखक जयप्रकाश नारायण जी हैं। इन्होंने नीतियों और कार्यों के महत्त्व को स्पष्ट किया है। ये अपने स्पष्ट कथनों के लिए जाने जाते हैं।

प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने पटना भाषण के दौरान स्पष्ट उद्घोष किया था कि मुझे किसी भी व्यक्ति से झगड़ा नहीं है। मुझे विरोध उसकी नीतियों से और उसके सिद्धान्तों से है। उसके कर्ता-धर्ता हमारे शासक हैं। श्रेष्ठ व्यक्ति हैं। उसके इशारे पर सारे कार्य हो रहे हैं। सत्ता वाले उसके ईशारे पर सारे कार्य कर रहे हैं। उन्हें दोषी मैं कम और उनके नीतियों और सिद्धांतों को दोषी अधिक मानता हूँ। उसी के आधार पर सारे कार्य हो रहे हैं। व्यक्ति नीतियों और सिद्धांतों का पालन करना अपना कर्त्तव्य समझता है। यही हद है और उन्होंने जो नीतियों बनायी उसी आधार पर कार्य सम्पादित होगा। अत: वास्तविक दोषी व्यक्ति नहीं, बल्कि उसके द्वारा सम्पादित नीतियाँ हैं, सिद्धांत हैं। वे लम्बे-चौड़े भाषण करते हैं। उनका कहना है कि मेरी सारी नीतियाँ जनता के लिए हैं। मेरे सारे सिद्धान्त जनता की भलाई के लिए हैं, लेकिन वे वास्तव में हाथी के दाँत के समान हैं। उसके खाने के और तथा दिखाने के और दाँत होते हैं। शासक वर्ग की नीतियाँ हाथी के दिखानेवाले दाँत हैं। जो अमल में है वह स्वार्थ है। अत: जयप्रकाश नारायण का विरोध गलत कार्य करने वाली नीतियों से है। मैं उनके विचारों से सहमत हूँ।

अथवा

"जिस पुरुष में नारीत्व नहीं अपूर्ण है।"

ये सुललित, सारगर्भित एवं अर्थमण्डित पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'दिगन्त भाग 2' के "अर्धनारीश्वर" नामक शीर्षक से ली गयी हैं। उसके रचयिता हिन्दी साहित्य के प्रखर विद्वान रामधारी सिंह 'दिनकर जी' हैं। ये कविता और गद्य के प्रमुख लेखक हैं। इसमें कवि ने नारी के गुणों की महत्ता पर प्रकाश डाला है।

प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने नारी के अन्दर मौजूद गुणों का बखान किया है। उनके अन्दर

सहिष्णुता, दया, ममता, और भिरुता के गुण मौजूद हैं। ये गुण यदि पुरुषों में भी आ जाय तो उससे उनके पुरुषत्व में कोई कमी नहीं आयेगी, बल्कि वे देवत्व के निकट आ जायेंगे। ये गुण जिस पुरुष में नहीं हैं वह वास्तव में अपूर्ण है। ये सारे गुण व्यक्ति को विनाश से बचाते हैं। उसमें देवत्व का संचार करता है तथा मानवता को सिरमौर बना देता है। पुरुष को सप्रयास इन गुणों का सेवन करना चाहिए। उसे नारी का गुण समझकर नहीं अपनाना, उनकी भारी भूल है, वह अपूर्ण है। हमारे समाज में अर्धनारी की कल्पना की गयी है। इस रूप में पुरुष भी आधा नारी बन सकता है।

(ख) चिर निराशा निरधर से

प्रतिच्छायित अश्रु-सर से

मधुप मुखर मरंद-मुकलित

में सजल जलजात रे मन

ये सुललित सारगर्भित अर्थमण्डित पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'दिगन्त भाग 2' के "तुमुल कोलाहल कलह में" शीर्षक से ली गयी हैं। इसके रचयिता हिन्दी छायावाद के प्रमुख स्तम्भ श्री जयशंकर प्रसाद जी हैं। उन्होंने मानव मन में उद्वेलित भावनाओं का अंकन किया है।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि स्पष्ट करता है कि मानव जीवन आसुओं का एक सरोवर है। उसपर पुरातन निराशा रूपी बादलों की छाया पड़ रही है। उस सरोवर में आशारूपी कमल खिल रहे हैं। यह पराग और मकरंद से परिपूर्ण है। इस कमल पर भौंरे मंडराते हैं। मानव जीवन में निराशा नीरधर के समान है। अन्त जीवन में आशा रूपी कमल खिलते हैं और उस आशा रूपी कमल के पराग और मकरंद आनन्द हैं। इस कमल पर विषम परिस्थिति रूपी भौंरे मडराते हैं और आनन्द रूपी मकरंद को प्रभावित करते हैं। वास्तव में कवि का यह दृष्टिकोण कल्पना लोक की गगनचुम्बी उड़ान है। इसमें कवि उच्चता को वरण करता है। कवि का दृष्टिकोण प्रशंसनीय है। मैं कवि के दृष्टिकोण की भूरी-भूरी प्रशंसा करता हूँ।

अथवा

शीत न लग जाय इस डर से

नहीं गोद से जिसे उतारा

छोड़ काम दौड़ कर आयी

माँ कहकर जिस समय पुकारा।

ये सुललित सारगर्भित एवं अर्थमण्डित पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक 'दिगन्त भाग II' के "पुत्र वियोग" नामक शीर्षक से उद्धृत हैं। उसके रचयिता श्रीमति सुभद्रा कुमारी चौहान जी हैं। ये हिन्दी में राष्ट्रीय भावना के पोषक हैं। इन पंक्तियों में कवयित्री ने माँ के हृदय की विशालता को चित्रित किया है।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री ने माता के हृदय में उद्वेलित भावनाओं का अंकन किया है। माँ का हृदय

अत्यन्त विशाल होता है। वह अपने पुत्र को प्राणों से भी बढ़कर प्यार करती है। उसके समस्त आयामों पर ध्यान रखती है, माँ कहती है कि मैंने अपने पुत्र को कभी अपने गोद से नीचे नहीं उतारा कि उसे गोद से नीचे उतारते ही शीत न लग जाये। मेरा ध्यान उसी ओर लगा रहता है। किसी भी कार्य में वह व्यस्त रहती है, फिर भी जब उसका लाडला माँ कहकर बुलाता है तो वह सारे कार्य छोड़कर दौड़ी आती है। माँ के हृदय में बच्चों का जन्नत बसता है। बच्चों के लिए भी माँ दुनियाँ से प्यारी है। वह सबसे अधिक महफूज माँ के गोद को ही समझता है, तभी तो जब से उसे कष्ट महसूस होती है, वह माँ को बुलाता हैं। वास्तव में कवयित्री की यह सोच ममता और दया की साक्षात् प्रतिमूर्ति है। इसमें जीवन्तता है, सादगी है, सच्चाई है। ये पंक्तियाँ अनुभवों से परिपूर्ण हैं।

प्रश्न-4. अपने मित्र को गर्मी की छुट्टी बिताने की योजना बताते हुए एक पत्र लिखें? 1×5=5

प्रिय मित्रवर,

परीक्षा भवन

जयहिन्द,

दिनांक- 15.12.2017

कुशलपूर्वक रहकर आपकी कुशलता हेतु परम पिता परमेश्वर से प्रार्थी रहा करता हूँ। अभी महाविद्यालय में जोर-शोर से क्लास चल रहा है। मैं नियमित महाविद्यालय जा रहा हूँ। गृहकार्य और अध्ययन में तल्लीन हूँ। अति व्यस्त दिन है। एक मिनट भी छुट्टी नहीं रहती है। यह विद्यार्थी जीवन का सुनहरा अवसर है। जब गर्मी चरम होती है तो महाविद्यालय ग्रीष्मावकाश में बंद हो जाता है। सूर्य प्रचण्ड हो जाता है और वातावरण शुष्क हो जाता है। उष्मा बढ़ जाती है। इस बढ़े उष्मा में अध्ययन संभव नहीं। अतः गर्मी में महाविद्यालय एक महीने के लिए बन्द हो जाता है। जब तक महाविद्यालय खुला रहा तब तक हम दैनिक कार्यों और अध्ययन में व्यस्त रहें। अब महाविद्यालय गर्मी की अतिशयता के कारण बंद होगा। गर्मी की छुट्टी बिताने के लिए मैं शिमला जाना चाहता हूँ। वहाँ मेरे चाचा जी रहते हैं। वहाँ की प्रकृतिक छटा निराली है। प्रकृति सुषमाओं की गोद में बसा यह स्थान धरती का स्वर्ग हैं। मेरा आग्रह होगा कि आप भी मेरे साथ ग्रीष्मावकाश में उस स्थान का भ्रमण करें। शेष दर्शनोपरान्त विशेष शुभ।

सेवा में,

स्वप्नील कुमार

ग्राम+पो०-शंकर टोला

जिला-पटना

आपका मित्र

नवीन कुमार

वर्ग- 12

क्रमांक- 516

अथवा

अनियमित डाक वितरण के संबंध में पोस्टमास्टर को शिकायती पत्र लिखें?

सेवा में,

श्रीमान् पोस्टमास्टर साहब,

सब पोस्ट ऑफिस

बहादुरपुर पटना 26

विषय- **अनियमित डाक वितरण के संबंध में।**

महाशय,

सविनय निवेदन है मैं कुम्हरार निवासी आपसे आपके डाकिये के कार्य सम्पादन की पद्धति से संतुष्ट नहीं हूँ। वे लापरवाह किस्म के व्यक्ति हैं। पत्र वे स्वयं आकर नहीं देते, बल्कि किसी के माध्यम से भिजवा देते हैं। इन पत्रों में किसी के नौकरी की नियुक्ति पत्र भी होती है। वह पत्र काफी विलम्ब से पहुँचता है। इस कारण कितने लोगों का सुनहरा अवसर उनके हाथ से निकल गया। उनसे इस संबंध में मैंने कई बार आग्रह भी किया लेकिन इसका कोई असर उन पर नहीं होता। वे इसे हल्के में लेते हैं।

अतः आपसे साग्रह अनुरोध है कि इस क्षेत्र के डाकिये को आप कड़ी चेतावनी देकर उन्हें नियमित स्वयं डाक पहुँचाने का आदेश देने की कृपा करें। यह उनका और आपका भी दायित्व बनता है। यदि ऐसा नहीं होगा तो मुझे बाध्य होकर आपके उच्चाधिकारी के पास आपकी शिकायत करनी पड़ेगी।

सेवा में
पोस्टमास्टर
सब पोस्ट ऑफिस
बहादुरपुर
पटना-26

विश्वासभाजन
अंजनी कुमार
मुहल्ला-कुम्हरार
पटना-26

प्रश्न-5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर 50-70 शब्दों में दें : 2×5=10

(I) लहना सिंह के गाँव में आया तुर्की मौलवी क्या कहता था?

उत्तर-लहना सिंह के गाँव में आया तुर्की मौलवी का कहना था कि जर्मनी वाले बड़े पंडित है। भारतीय वेद को पढ़कर वे विमान चलाने की विद्या जान गये। हमारा आदि ग्रंथ वेद विमानों की तकनीक से लैस है। उसमें संस्कृति के अन्य आयाम भी वर्णित हैं। केवल अपने जरुरत की चीजों को ग्रहण करके अन्य को नकारना उचित नहीं। वे गौ को नहीं मानते यह अनुचित हैं ग्रंथ की एक बात को ग्रहण करना और दूसरे को नकारना अनुचित है।

(II) जय प्रकाश जी किस प्रकार का नेतृत्व देना चाहते थे?

उत्तर- जयप्रकाश नारायण ने साफ कहा कि मुझे नेता नहीं बननी है। कोई मुझे डिक्टेट करे कि आपको यह करना है यह मुझे मंजूर नहीं। उन्होंने कहा मैं नेतृत्व छोड़ दूगाँ। मैं सबसे सलाह लूँगा। मुझे गालियाँ नहीं चाहिए। बात सुनिए और समझिए। सबकी बात मैं सुनूँगा और छात्रों से मैं बहस भी करूँगा। जो उचित होगा उसका मैं समर्थन करूँगा। जनसंघर्ष समिति की बात सुनूँगा पर निर्णय मेरा होगा और सबको मेरी बात माननी होगी तभी मैं आपका नेतृत्व करूँगा। यदि ऐसा नहीं होगा तो फिर नेतृत्व का कोई मतलब नहीं।

(III) मालती के घर का वातावरण आपको कैसा लगा?

उत्तर-लेखक मालती का भाई है। वह मालती के घर जाता है। सदा चहकने वाली मालती की स्थिति बड़ी विचित्र है। वह मंत्रवत हो चुकी है भाई के आगमन पर भी उत्साह नहीं। वह अतिथि के प्रश्नों का उत्तर भी अति संक्षिप्त दे रही है। उसके घर में उदासी है। आनन्द का नामोनिशान नहीं, सारा कार्य यंत्रवत हो चुका है। लेखक यह देखकर विस्मय से भरा हुआ है। नीरसता, घुटन, ऊब, नीरवता उस घर में फैला है। वह स्वयं अपने जीवन से ऊब चुकी है पर यह क्या? वह विवश है।

(IV) विशनी और मुन्नी को किसकी प्रतीक्षा है? वे डाकिये की राह क्यों देखती हैं?

उत्तर- विशनी और मुन्नी को डाकिये की प्रतीक्षा है। डाकिया पत्र लाकर देता है। विशनी का पुत्र और मुन्नी का भाई सैनिक है। उसने पत्र में लिखा था कि वह वर्मा की लड़ाई में जा रहा है। लड़ाई में क्या होगा यह कोई नहीं जानता? इसलिए विशनी और मुन्नी डाकिये का इन्तजार कर रही है कि वह पत्र लाकर दे, जिससे पता चले कि माँ का पुत्र और मुन्नी का भाई सही सलामत है। विशनी को अपने पुत्र तथा मुन्नी को अपने भाई के आने की प्रतीक्षा है। वही कुल का दीपक है। उसकी प्रतीक्षा लाजमी है।

(V) प्रात: नभ की तुलना बहुत नीला शंख से क्यों की गयी है?

उत्तर- प्रात: कालीन नभ की तुलना बहुत नीला शंख से इसलिए की गयी, क्योंकि प्रभातकालीन ऐसा रूप एक साथ नहीं दिखाई पड़ती है, कुछ दिखाई पड़ती है जो काफी नीला रहता है और इसके सिवा कुछ नहीं दिखाई पड़ता है। शंख की स्थिति भी यही है। उसका सम्पूर्ण भाग एक साथ नहीं दिखता। एक भाग दिखता है तो दूसरा छिपा रहता है। उससे वर्तुल ध्वनि निकलती है। प्रभात भी रात्रि की निरवता को तोड़ती हुयी विविध आवाजें, पशु-पक्षियों की आवाजों का समिश्रण उत्पन्न करती है। अत: कवि प्रात: की तुलना अधिक नीले शंख से करता है जो उचित है।

(VI) समूची दुनिया में जन-जन का युद्ध क्यों चल रहा है?

उत्तर-संसार में दो वर्ग है। एक पूँजीपति और दूसरा मजदूर। मजदूर वर्ग काम करता है और पूँजीपति वर्ग मौज करता है। यहाँ तक तो क्षम्य है, लेकिन मजदूर वर्ग के मुँह का निवाला भी छीना जा रहा है। उसके खिलाफ आवाज उठाता है यह स्वाभाविक है। इस प्रकार की आवाज पूरे विश्व में है। सर्वहारा पूरे विश्व

में ग्रसित है इस प्रकार पूरी दुनियाँ में जन-जन का युद्ध चल रहा है। यह किसी खास क्षेत्र की स्थिति नहीं है।

(VII) अधिनायक कौन है? उसकी क्या पहचान है?

उत्तर-आज के समाज में अधिनायक सत्ताधारी वर्ग को माना गया है। वह पूँजिपति है। वह मखमली मंच पर सोता है। मखमली पगड़ी बाँधता है। विलासितापूर्ण जीवन यापन करता है, वह तोप और गोली छुड़वाकर अपनी जय बुलवाता है। बेचारी निरीह जनता उसका जयघोष करती है। उसकी लाचारी है। इसके सिवा उसके पास कोई दूसरा चारा नहीं।

(VIII) लोहा क्या है? उसकी खोज क्यों की जा रही है?

उत्तर-लोहा से तात्पर्य कर्म से है। व्यक्ति कर्म करता है यह कठिन है। लोहा कठिन कर्म का प्रतीक है। हर मेहनतकश लोहा का प्रतीक है। घर गृहस्थी के औजार लोहा से ही निर्मित होते हैं वे सोने-चाँदी से नहीं बनाये जाते। स्त्रियाँ भी लोहा का ही प्रतीक है। वह रोजमर्रे की जिन्दगी में अपने कर्मों में लगी रहती है। वह समाज में घुली-मिली है। लोहा अधिकतर सर्वहारा वर्ग के यहाँ मिलता है। मेहनतकश भी सर्वहारा वर्ग ही होता है। इसी के कंधे के ऊपर समाज की जिम्मेदारी है। वह मेहनतकश यदि कर्म छोड़ देगा तो सामाजिक संरचना बिगड़ जायेगी। इसलिए लोहा की खोज की जा रही है।

प्रश्न-6. निम्न प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 150-250 शब्दों में दें? **3×5=15**

(I) प्यारे नन्हें बेटे शीर्षक कविता का सारांश लिखें?

उत्तर-विनोद कुमार शुक्ल समकालीन चेतना के कवि हैं। उन्होंने समाज की वर्तमान स्थितियों की चर्चा की है। इनके काव्य में गहरी अनुभूति झलकती है। प्रस्तुत कविता 'प्यारे नन्हें बेटे को' वार्तालाप शैली में लिखी गयी है। लोहा कार्यक्षमता और साधन का प्रतीक है। यह सब जगह मिलता है। घर गृहस्थी के समान, चिमटा, कलछुल, सिगड़ी, कब्जे, साँकल आदि सभी चीजें लोहा से ही निर्मित होती हैं। ठीक उसी प्रकार समाज का मेहनतकश व्यक्ति लोहा के सामान हर जगह मौजूद है। बिना लोहा के घरेलू गृहस्थी के सामान नहीं बन सकते ठीक उसी प्रकार कठिन घरेलू कार्य और रोजमर्रा की जिन्दगी बिना मेहनतकश के सहयोग के नहीं चल सकतीं। कृषि के औजार, फावड़ा, टगिया, कुदाल, कुदाली, खुड़पी आदि चीजें लोहा से ही बनी है और इसका उपयोग करने वाला व्यक्ति भी लोहा ही है। समाज में दबी, सताई स्त्री भी लोहा ही है। वह समय और समाज की मार को आसानी से झेलती है। यह समाज में पूरी तरह व्याप्त है।

(II) मशकवाले की हार-जीत कविता में क्या भूमिका है?

उत्तर-हार-जीत शीर्षक कविता के रचयिता अशोक वाजपेयी हैं। इन्होंने समाज की विद्रूपताओं को रेखांकित किया है। मशकवाले उसे कहते हैं जो युद्ध-भूमि में पानी का थैला रखता है। उसकी जिम्मेदारी सिर्फ सड़क सींचने की है। सच का आकलन और उसका प्रकटीकरण उसकी जिम्मेदारी नहीं। लोग ढोल-बाजे के साथ

आ रहे हैं। यह जीत की खुशी का इजहार है। मशकवाला जो युद्ध में बराबर साथ रहा वह कहता है कि हम जीतकर भी हार गये हैं। जनता को यह पता नहीं कि कितने सैनिक गये। कितने लापता रह हैं और कितने मारे गये इसकी वास्तविकता की जानकारी जन-समुदाय को नहीं। मशकवाला चिल्लाता है कि हम जीत कर भी हार गये हैं। मशकवाले की इस घोषणा पर किसी का ध्यान नहीं जाता। वास्तविकता की जानकारी किसी को नहीं। यह आडम्बर है। मशकवाले का कार्य सिर्फ सड़क सींचना है, वास्तविकता को उजागर करना नहीं।

(III) ज्वाला कहाँ से उठती है? कवि ने उसे अतिक्रुद्ध क्यों कहा है?

उत्तर-ज्वाला जन मानस में उठती है। जब जनता का निवाला उससे छीना जाता है, वह विद्रोह करती है। यह क्रांति और चेतना की ज्वाला है। यह जन मानस में धधकती है। जब उसका मुख का कौर छीन जाता है तथा हाथ का काम नेस्तनाबूत कर दिया जाता है तो जनता क्रुद्ध हो जाती है। उसकी सोयी चेतना जाग उठती है। वह मरने और मारने के लिए उद्धत हो जाती है। जन विद्रोह भड़क उठता है। यह जन-जन के हृदय में उठनेवाली ज्वाला है। इसे दबाना बड़ा मुश्किल है। वह आततायी, अत्याचारी व दुराचारी को नेस्तनाबूद करने के लिए तैयार हो जाती है। जब उसके अधिकार जाते हुए दिखाई देते हैं तो वह भूखे सिंह के समान दहाड़ उठता है। उसकी दहाड़ और गर्जन को दबाना मुश्किल है। जब तक जनता सोयी हुयी है तब तक उस पर शासन किया जा सकता है, परन्तु जैसे ही वह जाग गयी तो उसे दबाना आग में घी देने के समान है। वह और भभक पड़ती है तथा उग्र रूप धारण कर लेती है। ऐसे समय में मानव-दानव का रूप धारण कर लेते हैं, ऐसी ही स्थितियों को कवि अति क्रुद्ध कहता है।

(IV) लेखक और मालती के सम्बन्ध का परिचय पाठ के आधार पर दें?

उत्तर-लेखक और मालती आपस में भाई-बहन थे। भाई-बहन का पावन रिश्ता होता है। वे दोनों साथ-साथ खेलते थे, खाते थे और कभी-कभी आपस में मार-पीट भी कर लिया करते थे। बहन और भाई एक-दूसरे के आँखों का तारा होते हैं। शादी के बाद मालती अपने ससुराल चली जाती है। यह विधि का विधान है। प्रेम इस विधान में बाधक नहीं बन पाता। भाई जब कभी बहन के घर जाता है, तो उसे प्राणों से भी बढ़कर वह मानती है। व्यक्ति परिस्थितियों का दास होता है। मालती अपने ससुराल में यंत्रवत जीवन व्यतीत कर रही है। इसका मिशाल लेखक के मालती के घर जाने पर मिलता है। वह उसके घर जाकर तीखे सवाल करता है तो उसका उत्तर हाँ ना देना उसकी जड़ता का परिचायक है। भाई-बहन का यह रिस्ता पूर्व में कभी खोटेपन में नहीं आया, फिर यहाँ आने पर मालती का उससे ऐसा व्यवहार घरेलू जड़ता को दर्शाता है। मालती टूट चुकी है। उसकी मानवता तार-तार हो चुकी है, तभी तो वह अपने प्यारे भाई के साथ ऐसा व्यवहार करती है।

(V) भगत सिंह की विद्यार्थियों से क्या अपेक्षाएँ हैं?

उत्तर - भगत सिंह की आकांक्षा की धूरी में विद्यार्थी हैं। वे विद्यार्थियों को सक्रिय राजनीति में हिस्सा लेने

के प्रबल समर्थक हैं। उनका मानना है कि देश का आगामी भविष्य विद्यार्थी हैं। वे समाज के सबसे ताकतवर समुदाय हैं। उन्हें अपनी जिम्मेदारी को समझना चाहिए। यदि वे इससे उदास रहेंगे तो आगे आने वाला समाज कमजोर होगा। वे शिक्षा प्राप्त करें, लेकिन राजनीति का भी सक्रिय सदस्य रहें और उसकी जानकारी रखें।

जो व्यक्ति घर-गृहस्थी के जंजाल में फँस गया उसे अन्यत्र सोचने का मौका कहाँ? हमारे विद्यार्थी नौजवान हैं, ताकतवर हैं, उनमें ऊर्जा है। वे आगे आयें। देश की स्वतंत्रता, स्वच्छन्दता और स्मिता को बरकरार रखने की क्षमता विद्यार्थियों में ही है। वे पठन-पाठन के साथ-साथ राजनीति को भी अपना विषय मानें। पढ़े-लिखे लोग देश का बागडोर अच्छी तरह चला सकते हैं। जो अपने हितों को समझें। विद्यार्थियों पर जो अत्याचार हुआ है उसे वे भूले नहीं। अपने राष्ट्र के अतीत की जानकारी लें और उससे शिक्षा ग्रहण करके अपने भविष्य को सवारें। यदि विद्यार्थी समाज इसमें दिलचस्पी लेगा तो देश का वर्तमान सुन्दर से सुन्दरतम होगा। अतीत का सम्बन्ध वर्तमान की संरचना को सुन्दर से श्रेष्ठ बना सकती बशर्ते विद्यार्थी इसका वाहक बनें। विद्यार्थी ऊर्जावान और ताकतवर हैं।

(VI) गंगा पर पुल बनाने में अंग्रेजों ने क्यों दिलचस्पी नहीं ली?

उत्तर-गंगा पर पुल बनाने में अंग्रेजों की दिलचस्पी नहीं लेने का कारण राजनीति था। अंग्रेजों के खिलाफ आवाज उत्तरी बिहार में गूंज उठी थी। चम्पारण आन्दोलन, नमक सत्याग्रह आदि विरोधी स्वर गूँज रहे थे। यदि पुल बन जाता तो उत्तर और दक्षिण बिहार एक हो जाता और विरोध के स्वर पूरे बिहार में फैल जाते। दक्षिण के विरोधी नेताओं को उत्तर बिहार से बल मिल जाता। अंग्रेज इसलिए पुल के पक्षधर नहीं थे। अंग्रेजों का उद्देश्य शासन करना था न कि उसका विकास करना। पुल उनके शासन में बाधक बन जाता।

गंगा बिहार के बीच से प्रवाहित होती है। यह इसे दो भागों में बाँटती है। उत्तर के लोग सजग थे। इसलिए अंग्रेजों की दमन नीति यहाँ अधिक थी। चम्पारण में किसानों को सताया जा रहा था। इस दमन नीति का विरोध दक्षिण बिहार में भी पुल बनाने पर आरम्भ हो जाता। इसलिए अंग्रेज जानबुझ कर गंगा नदी पर पुल बाँधने में दिलचस्पी नहीं ले रहे थे।

प्रश्न-7. संक्षेपण करें : **1×4=4**

धर्म को जिसने भी एक तरह की अफीम कहा, झूठ नहीं कहा, लेकिन ऐसा नहीं लगता कि यह अफीम किसी-न-किसी को दी हो, लोगों ने खुद अपने लिए इसका आविष्कार किया। यह न होती तो दूसरी कोई अफीम होती। जहाँ सर पर पूरे वक्त एक तलवार लटक रही हो और किसी को कुछ पता न हो कि अगले क्षण क्या हो जाएगा, वहाँ आदमी का मन एक-न-एक सहारा खोजता ही है। कहाँ तक आदमी चिंता करे, किस चीज की चिंता करें।

संक्षेपण : **शीर्षक : धर्म**

धर्म रूपी अफीम किसी को दी हुई नहीं, बल्कि इसका आविष्कारक मानव खुद है। इसके नहीं रहने पर दूसरी अफीम ढूंढो। जहाँ आनेवाला क्षण अनिश्चित है, वहाँ मानव सहारा खोजता है।

कुल शब्दों की संख्या 8। संक्षेपित-3।